शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 21-07-2020 वर्ग - B.A-II

भारत के अर्थव्यवस्था में लघु उद्योग की भूमिका

देश के विकास में लघु उद्योग की एक बड़ी भूमिका है। भारतीय अर्थव्यवस्था में इसका योगदान औद्योगिक मूल्य संवर्धन का लगभग 40% है।

यह अनुमान है कि लघु उद्योग क्षेत्र में निश्चित सम्पत्तियों में एक मिलियन रुपये का निवेश लगभग 10% अंकों के मूल्य संवर्धन के साथ 4.62 मिलियन मूल्य की वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन करता है।

पिछले वर्षों में लघु उद्योग क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है। विभिन्न योजनावधियों के दौरान वृद्धि दर काफी प्रभावशाली रही है। लघु उद्योग इकाईयों की संख्या वर्ष 1980-81 में अनुमानित 0.87 मिलियन की तुलना में वर्ष 2000 में चढ़कर 3 मिलियन हो गई है।

वर्ष	लक्ष्य	उपलब्धि
1991-92	3.0	3.1
1992-93	5.0	5.6
1993-94	7.0	7.1
1994-95	9.1	10.1
1995-96	9.1	11.4
1996-97	9.1	11.3
1997-98	*	8.43
1998-99	*	7.7
1999-00	*	8.16
2000-01(P)	*	8.90

जब इस क्षेत्र के निष्पादन को सम्पूर्ण निर्माण और औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि की तुलना में देखा जाता है तो लघु उद्योग क्षेत्र के लचीलेपन में विश्वास जमाता है।

1. रोजगार (Employment)

भारत में लघु उद्योग क्षेत्र कृषि के बाद भारतीय जनसंख्या के लिए सर्वाधिक रोजगार का अवसर सृजन करता है। यह अनुमान है कि लघु उद्योग क्षेत्र में निश्चित सम्पत्तियों में निवेशित 1,00,000 रुपये चार लोगो के लिए रोजगार सृजित करता है।

रोजगार सृजन में खाद्य उत्पाद उद्योग का प्रथम स्थान है जो 0.48 मिलियन (13.1 प्रतिशत) लोगो को रोजगार देता है। अगले दो उद्योग समूह है, गैर-धात्विक खनिज उत्पाद जो 0.45 मिलियन (12.2%) और धातु उत्पाद जो 0.37 मिलियन (10.2%) लोगो को रोजगार देते है। रसायनों और रसायन उत्पादों, इलेक्ट्रिकल पार्टस को छोड़कर मशीनरी पार्टस, काष्ठ उत्पादो, आधारभूत धातु उद्योग, कागज उत्पादों और छपाई, सिलेसिलाए वस्त्र, मरम्मत सेवाओं तथा रबड़ व प्लास्टिक उत्पादो का योगदान 9% से 5% के बीच है जबकी इन आठ उद्योग समूहों का योगदान 49% है तथा अन्य सभी उद्योगो का योगदान 5% से कम है।

शहरी क्षेत्रो के लिए, खाद्य उत्पादों और धातु उत्पादों की हिस्सेदारी लगभग 22.8% है। electrical को छोड़कर मशीनरी पार्टस, गैर-धात्विक खनिज उत्पाद और रसायन व रसायन उत्पाद रोजगार का परस्पर 26.2% है।

2. निर्यात

भारत के वर्तमान निर्यात निष्पादन में लघु उद्योग क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय निर्यात में 45-50 % भाग लघु उद्योग क्षेत्र का है। लघु उद्योग क्षेत्र से प्रत्यक्ष निर्यात कुल निर्यात का लगभग 35 % है। प्रत्यक्ष निर्यात के अतिरिक्त, यह अनुमान है कि लघु उद्योग इकाइयाँ अप्रत्यक्ष निर्यात में भी लगभग 15 % हिस्सा बंटाती है। यह कार्य मर्चेंट निर्यातकों, व्यापार घरानों और निर्यात घरानों के माध्यम से होता है। वे बड़ी इकाईयों से निर्यात आदेशों के रूप में अथवा तैयार निर्यात योग्य माल के लिए प्रयोग हेतु हिस्सों और पुंजी के उत्पाद के रूप में भी हो सकते है।
कई लोगो को यह जानकर आश्चर्य होगा कि लघु उद्योग क्षेत्र के निर्यातों में गैर-परंपरागत उत्पादों का हिस्सा 95 % रही है। इस दशक में लघु उद्योग क्षेत्र से निर्यात की वृद्धि दर अति उत्तम रही है। इसमें रेडीमेड वस्त्र, चमड़ा और जवाहरात व आभूषण इकाइयों के निष्पादन का प्रमुख योगदान रहा है।

वर्ष	निर्यात (करोड़ रु) (वर्तमान मूल्य पर)
1994-95	29,066, (14.86)
1995-96	36,470, (25.50)
1996-97	39,249, (7.61)
1997-98	43946, (11.97)
1998-99	48979, (10.2)
1999-00(P)	53975, (10.2)

P- अंतिम

उत्पाद समूह जहां लघु उद्योग क्षेत्र का निर्यातों में दबदबा है, वे हैं खेलों के सामान, सिलेसिलाए वस्त्र, ऊनी और बुने हुए वस्त्र, प्लास्टिक उत्पाद, संसाधित खाद्य पदार्थ तथा चर्म उत्पाद। लघु उद्योग क्षेत्र विश्व व्यापार संगठन द्वारा प्रारंभ की गई नयी व्यापार व्यवस्था के अनुसार अपने निर्यात रणनीति का पुनर्भिमुखीकरण कर रहा है।

3. अवसर :—

निम्नलिखित कारणों से लघु उद्योग क्षेत्र में विशाल अवसर हैं :—

i) कम पूंजी की आवश्यकता।

ii) सरकार द्वारा विस्तृत संवर्धन और समर्थन

iii) लघु उद्योग क्षेत्र द्वारा विशिष्ट निर्माण के लिए आरक्षण

iv) परियोजना प्रोफाइल

v) धन- वित्त और सब्सिडी

vi) मशीनरी प्राप्ति

vi) कच्चे माल की प्राप्ति

vii) मानव-शक्ति प्रशिक्षण

viii) तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल

ix) औजार तथा परीक्षण सहयोग

x) सरकार द्वारा विशिष्ट क्रय के लिए आरक्षण

xi) निर्यात संवर्धन

xii) सकल आर्थिक वृद्धि के कारण घरेलू बजार आकार में भोग में वृद्धि है।